National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.nationaljournals.com
ISSN: 2455-9040, Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 22-02-2021, Accepted: 07-03-2021, Published: 12-04-2021
Volume 6, Issue 2, 2021, Page No. 16-18

माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का, सामाजिक विषय में निष्पत्ति का एक तुलनात्मक अध्ययन–अमरोहा जनपद के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. योगेश्वर प्रसाद शर्मा, डॉ. समी उर्रहमान खान सूरी, रूपाली

[1] शोध निर्देशक, असि. प्रो. शिक्षा विभाग, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] सह–निर्देशक, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत
[3] शोधकर्ती (शिक्षाशास्त्र), श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
यह शोध अध्ययन अमरोहा जनपद उत्तर प्रदेश के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर किया गया। शोधकर्ती ने अपने शोध में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् 400 (200 छात्र + 200 छात्रायें) को सम्मिलित किया। शोध अध्ययन में अमरोहा जनपद के 20 (10 शहरी एवं 10 ग्रामीण) प्राईवेट माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया। शोध अध्ययन में कक्षा 11 में अध्ययनरत् कला वर्ग के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। शोधकर्ती ने अपने शोध में शैक्षिक रूचि तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति चरों को सम्मिलित किया है। शोध अध्ययन का उद्देश्य– माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति का अध्ययन करना तथा शैक्षिक रूचि तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में सहसम्बन्ध ज्ञात करना। शैक्षिक रूचि को ज्ञात करने के लिए डॉ.एस. पी. कुलश्रेष्ठ द्वार निर्मित शैक्षिक रूचि प्रपत्र (एजुकेशनल इन्ट्रेस्ट रिकार्ड– ईआईआर) का प्रयोग किया गया तथा विद्यार्थियों की सामाजिक विषय निष्पत्ति के लिए 10वीं कक्षा में सामाजिक विषय में प्राप्त अंकों को लिया गया। आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन, टी–टेस्ट– क्रान्तिक अनुपात तथा सहसम्बन्ध गुणांक विधि का प्रयोग किया गया।
शोध परिणाम में पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में सार्थक अन्तर है। शहरी विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शैक्षिक रूचि तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में उत्तम है। शैक्षिक रूचि तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति चरों में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं पाया गया।

मुख्य शब्दः शैक्षिक रूचि, सामाजिक विषय निष्पत्ति, एजुकेशनल इन्ट्रेस्ट रिकार्ड–ईआईआर।

प्रस्तावना
शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। दूसरे शब्दों में व्यक्ति अपने जन्म से मृत्यु तक जो कुछ सीखता और अनुभव करता है। वह सब शिक्षा के व्यापक अर्थ के अन्तर्गत माना जाता है। शिक्षाशास्त्री जब शिक्षा की बात करते हैं तो वे शिक्षा के इसी रूप को अपनी विचार सीमा में रखते हैं। इस सम्बन्ध में हम विद्वानों के विचारों को नीचे अंकित कर रहते हैं।
लाज के अनुसार– "बच्चा अपने माता–पिता को, और छात्र अपने शिक्षकों को शिक्षित करता है। प्रत्येक बात, हम जो कहते, सोचते या करते हैं हमें किसी प्रकार भी दूसरे व्यक्तियों के द्वारा कहीं, सोची या की गयी बात से कम शिक्षित नहीं करती है। इस व्यापक अर्थ में जीवन शिक्षा है और शिक्षा जीवन है।"
टी0 रेमण्ट के शब्दों में– "शिक्षा विकास का वह क्रम है, जिससे व्यक्ति अपने को धीरे–धीरे विभिन्न प्रकार से अपने भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बना लेता है। जीवन ही वास्तव में शिक्षित करता है। व्यक्ति अपने व्यवसाय, पारिवारिक जीवन, मित्रता, विवाह, पितृत्व, मनोरंजन, यात्रा आदि के द्वारा शिक्षित किया जाता है।"
भारतीय भाषाओं में शिक्षा के पर्यायवाची के रूप में विद्या तथा ज्ञान शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। विद्या शब्द का उद्गम भी "विद्" धातु से हुआ है, जिसका अर्थ होता है "जानना" पता लगाना अथवा 'सीखना'। बाद में 'विद्या' शब्द पाठ्यक्रम के रूप में रूढ़ हो गया है। आरम्भ में विद्या के अन्तर्गत चार विषयों का समावेश किया गया। कुछ समय पश्चात् मनु ने "आत्मविद्या" नामक पंचम विधा का एक प्रकार भी जोड़ा और शनैः–शनैः विद्याओं की संख्या चौदह हो गयी। जिसमें वेदांग, वेद, धर्म, न्याय, मीमांस आदि समावेशित हुये, परन्तु मूलतः विद्या शब्द का अर्थ ज्ञातव्य के रूप में प्रचलित रहा।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व
किसी भी विद्यालय की प्रतिष्ठा उसके परीक्षा परिणाम पर निर्भर करती है। विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम अच्छे लाने के लिए प्रत्येक विषय महत्वपूर्ण होता है। सामाजिक विषय की निष्पत्ति का परिणाम विद्यार्थियों की सम्पूर्ण शैक्षिक निष्पत्ति पर पड़ता है। किसी भी विषय की निष्पत्ति को प्रभावित करने वाले कई कारक होते हैं।
प्रस्तुत शोध अध्ययन में "माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का, सामाजिक विषय में निष्पत्ति का एक तुलनात्मक अध्ययन–अमरोहा जनपद के विशेष सन्दर्भ में" किया गया है।
सामाजिक विषय विद्यार्थियों के विकास में विकास में सहायक होता है। इसके द्वारा विद्यार्थियों को अधिकारों तथा कर्त्तव्यों का समुचित ज्ञान कराया जा सकता है। यह विद्यार्थियों के सामाजिक चरित्र के विकास में सहायक होता है। सहयोग, प्रेम, सहकारिता जैसे गुणों का विकास इसके अध्ययन के द्वारा होता है। यह विषय छात्रों के उत्तरदायित्व को दिशा प्रदान करता है।
इस शोध अध्ययन से विद्यार्थियों में अनेक गतिविधियों में रूचि उत्पन्न करके उन्हें अपने मन पसन्द क्षेत्र में आगे बढ़ने में उनकी सहायता करेगा।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण
शोध अध्ययन में सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के अभाव में अनुसंधान कर्ता उस दिशाविहीन यात्री के सामान है जो स्वयं नहीं जानता कि उसे किस दिशा में आगे बढना है। सम्बन्धित साहित्य अनुसंधान कर्ता के लिए उस प्रकाश पुंज के समान होता है। जिसका अनुसरण करते हुए वह अपने लक्ष्य तक पहुंचता है।
सम्बन्धित शोध साहित्य के अध्ययन् के द्वारा परिणामों की व्यवस्था

करने के लिए तुलनात्मक आंकड़ो को प्राप्त करने एवं उनका विश्लेषण करने में सहायता प्राप्त होती है।सम्बन्धित शोध साहित्य की सहायता से शोधकर्त्ता को अपने अध्ययन क्षेत्र में निपुणता एवं पांडित्य प्राप्त होती है। सम्बन्धित शोध साहित्य का गम्भीर अध्ययन अनुसंधानकर्त्ता के ज्ञान में वृद्धि करता है। यह अध्ययन विचार, सिद्धांत, व्याख्या व उन परिकल्पनाओं को आधार प्रदान करता है जो शोध अध्ययन् के निर्माण के लिए महत्पूर्ण होती है। सम्बन्धित शोध साहित्य, शोध समस्या के समाधान के लिए उचित विधि, प्रक्रिया, तथ्यों के साधन तथा सांख्यिकी तकनीकी के चुनाव में सहायता प्रदान करता है।

अमटोरा (1995) ने ''प्रारम्भिक किशोरवस्था के छात्रों की रुचियों का अध्ययन'' विषय पर शोध कार्य किया। यह अध्ययन अमेरिका के सातवीं एवं आठवीं श्रेणी के 679 किशोरों पर किया गया। अध्ययन में छात्रों को अपनी विद्यालयी सम्बन्धी रुचियों को व्यक्त करने की पूर्ण स्वतन्त्रता दी गयी। प्रत्युत्तरों को 24 रुचि श्रेणी में रखा गया, प्रत्येक चार समूह के लिए आंकड़ों का विश्लेषण रुचि श्रेणी, श्रेणी स्तर की समानता एवं विभिन्नता और संयुक्त रुचि क्षेत्रों में चुनाव के अंश के आधार पर किया गया।

श्रीवास्तव, (1998) ने ''छात्रों की शैक्षिक रुचियों तथा सामाजिक आर्थिक स्तर पर परिवारिक सम्बन्ध के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन'' विषय पर शोधकार्य किया। शोध अध्ययन का उद्देश्य छात्रों की शैक्षिक रुचियों का अध्ययन करना तथा छात्रों के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक रुचियों के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन करना था। शोध में पाया गया कि छात्र अधिकतर माता–पिता द्वारा स्वीकृत रहते हैं, छात्रों की शैक्षिक रुचि प्रत्यक्ष रूप से सामाजिक आर्थिक स्तर से प्रभावित रहती है तथा सामाजिक आर्थिक स्तर के विभिन्न वर्ग समूहों के छात्र माता–पिता की अस्वीकारात्मक दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति मैं परस्पर भिन्नता रखते हैं।

गुलशन कुमार नागपाल (2001) ने "माध्यमिक स्तर पर गणित विषय के छात्र–छात्राओं की रूचि का अध्ययन" विषय पर उदयपुर विश्वविद्यालय से शोध्कार्य किया। अध्ययन का निष्कर्ष था कि इस स्तर पर बालकों की रूचियाँ परिवर्तनशील होती है। न्यादर्श से मात्र 40 प्रतिशत छात्र ही विज्ञान विषय पर रूचि रखते हैं। व्यवसाय के रूप में अभियान्त्रिकी में अधिक रूचि प्रदर्शित की गयी। यह भी पाया गया कि व्यावसायिक रूचि व बुद्धि में कोई सम्बन्ध नहीं होता।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

शैक्षिक रूचि

डब्ल्यू वी0डी0 बिंघम (1937) के अनुसार–"रूचि वह प्रवृत्ति है जो किसी अनुभव में लग जाती है तथा उसमें निरन्तर होती है।"

सुपर (1967) के शब्दों में–"रूचि कोई पृथक मनोवैज्ञानिक इकाई नहीं है, बल्कि यह सम्पूर्ण मानव व्यवहार का एक पहलू है।"

इस प्रकार रूचि का शाब्दिक अर्थ हुआ किसी कार्य में मन लगाकर कार्य करने की भावना। अर्थात् रूचि वह प्रेरणा शक्ति है जो किसी भी मनुष्य को कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।

निष्पत्ति/उपलब्धि

शिक्षा प्रक्रिया को संचालित करने वाले व्यक्ति विभिन्न स्तरों के विद्यार्थियों के लिए शिक्षण–अधिगम क्रियाओं का आयोजन करते हैं। शैक्षिक निष्पत्ति से तात्पर्य इन शिक्षण उद्देश्य की प्राप्ति से है। विद्यार्थियों ने इन शैक्षिक उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया है, यही उनकी निष्पत्ति को बताता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थियों द्वारा कक्षा 10 में प्राप्त सामाजिक विषय के अंकों को निष्पत्ति के रूप में लिया गया।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की सामाजिक विषय निष्पत्ति का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में सहसम्बन्ध ज्ञात करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं को लिया गया–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की सामाजिक विषय निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।

शोध अध्ययन का सीमांकन

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में अमरोहा जनपद के 20 (10 शहरी एवं 10 ग्रामीण) प्राईवेट माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल अमरोहा जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् 400 (200 शहरी एवं 200 ग्रामीण) विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् 200 छात्र एवं 200 छात्राओं को सम्मिलित किया गया।
4. प्रस्तुत शोध अध्ययन में कक्षा 11 में अध्ययनरत् कला वर्ग के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।
5. प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षिक रूचि तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति चरों को सम्मिलित किया गया।

शोध अभिकल्प

शोध विधि एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया एवं न्यादर्श के रूप में अमरोहा जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत 400 (200 शहरी + 200 ग्रामीण) विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थियों के शैक्षिक रूचि को ज्ञात करने के लिए डॉ.एस.पी. कुलश्रेष्ठ द्वार निर्मित शैक्षिक रूचि प्रपत्र (एजुकेशनल इन्ट्रेस्ट रिकार्ड– ईआईआर) का प्रयोग किया गया तथा विद्यार्थियों की सामाजिक विषय निष्पत्ति के लिए 10वीं कक्षा में सामाजिक विषय में प्राप्त अंकों को लिया गया।

सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ती द्वारा एकत्रित किये गये आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन, टी0टेस्ट–क्रान्तिक अनुपात तथा सहसम्बन्ध गुणांक विधि का प्रयोग किया गया।

शोध निष्कर्ष

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि में सार्थक अन्तर है। क्योंकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया है। इसलिए माध्यमिक स्तर पर

अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थी माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शैक्षिक रूचि में उत्तम हैं। अतः परिकल्पना कि "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" अस्वीकृत की जाती है।

2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की सामाजिक विषय निष्पत्ति में सार्थक अन्तर है। क्योंकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया है। इसलिए माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थी माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा सामाजिक विषय निष्पत्ति में श्रष्ठ हैं। अतः परिकल्पना कि "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की सामाजिक विषय निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" अस्वीकृत की जाती है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है। क्योंकि माध्यमिक स्तर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं पाया गया है। अतः इससे पता चलता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का सामाजिक विषय निष्पत्ति पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः परिकल्पना कि "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षित रूचि तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।" स्वीकृत की जाती है।

भावी शोध कार्य हेतु सुझाव

1. यह शोध कार्य अमरोहा जनपद पर किया गया। इसे अन्य जनपदों, मण्डलों के विद्यार्थियों को लेकर भी किया जा सकता है।
2. शोधकर्ती ने अपने शोध कार्य में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को ही शामिल किया है। यह शोध कार्य अन्य स्तर के विद्यालयों में भी किया जा सकता है।
3. शोधकर्ती ने अपने शोध में शैक्षिक रूचि तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति चरों को सम्मिलित किया है। इसके अतिरिक्त अन्य चरों पर भी शोध कार्य किया जा सकता है।
4. शोधकर्ती ने अपने शोध में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् 400 (200 छात्र + 200 छात्रायें) को सम्मिलित किया है। भविष्य में इससे अधिक विद्यार्थियों को लिया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. अमटोरा, (1995) 'इन्टरेक्ट ऑफ अर्ली एडालसेन्ट्स; जे0 जेनेरिक साइकोलॉजी, सेन्ट कांउन्सिल कॉलेज, पेज 133–145.
2. हेनरी ई0 गैरिट शिक्षा और मनोविज्ञान में सॉख्यिकी के प्रयोग, कल्याणी प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ–43–50
3. श्रीवास्तव, सपना, (1998) 'छात्रों की शैक्षिक अभिरुचियों तथा सामाजिक आर्थिक स्तर पर पारिवारिक सम्बन्धों के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन, एम0एड0 डिजर्टेशन, राजस्थान विश्वविद्यालय।
4. निगम, प्रतिभा (2004) माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं की शैक्षिक रुचियों एवं विद्यालयी अभिवृत्तियों के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन, एम0एड0 डिजर्टेशन, राम मनोहर लोहिया विश्वविद्यालय, फैजाबाद।
5. एस0पी0 कुलश्रेष्ठ ई0आई0आर0 एजुकेशनल इन्ट्रेस्ट रिकॉर्ड। नेशनल साईक्लॉजिकल कार्पोरेशन, आगरा।
6. कपिल, एच0के0 (2002) सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।